ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 44 | 18 से 24 फरवरी, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 | मा. शु. 11

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस और बोधोत्सव आम जनता के लिए आकर्षण का केन्द्र बनें

समस्त आर्य समाजें, गुरुकुल तथा शिक्षण संस्थाएँ

कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, गौहत्या तथा धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध

युद्धस्तर पर प्रारम्भ करें जन-जागरण

- स्वामी आर्यवेश

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व पटल पर छाई हुई विविध विकृतियों के सुधारक के रूप में इस शस्य श्यामला भारत भूमि पर अवतीर्ण हुए थे। उन्होंने वेदों का अनुशीलन किया और उन्हीं के अनुसार समाज के सर्वांगीण परिष्कार का निश्चय किया। महर्षि ने सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, धार्मिक इन सभी विषयों पर प्रकाश डालकर उसको सही दिशा प्रदान करने का भागीरथ प्रयास किया था। उन्होंने अवतार वाद, जन्म पत्र, श्राद्ध इत्यादि का तर्कपूर्ण विरोध करते हुए, समाज को जगाने का कार्य किया। भारतीय संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए, अन्ध विश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों, जड़ताओं पर प्रहार किया। आज देश पुनः भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, जातपात, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, शोषण, पाखण्ड सहित अनेकों कुरीतियों से जकड़ा हुआ है। समय की पुकार है कि समाज में अत्यन्त गहराई तक व्याप्त अन्धविश्वासों तथा सामाजिक बुराईयों को जड़ से उखाड़ फेंका जाये और महर्षि का अन्धविश्वास कुसंस्कारों, कुरीतियों को दूर करने का सन्देश घर-घर पहुँचाया जाये।

नव-जागरण के पुरोधा, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस इस वर्ष फाल्गुन बदी दशमी विक्रमी सम्वत् २०७२ तदनुसार ४ मार्च, २०१६ दिन शुक्रवार तथा ऋषि बोधोत्सव ७ मार्च, २०१६ सोमवार को पड़ रहा है अतः इन पावन पर्वों को अत्यन्त धूम धाम से समारोह पूर्वक अपने-अपने क्षेत्र में मनाएँ।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारों के मार्ग दर्शन के ही कारण है। स्वामी जी ने यह ज्ञान हम तक पहुँचाया है इसके लिए हम सब सदैव उनके ऋणी रहेंगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान ऋषि के विचारों को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाकर अन्य बन्धुओं को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहें। हमारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों और अन्ततः समूचे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना।

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव के पर्वों के अवसर पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें और यह आयोजन आर्य समाज से बाहर निकल कर जैसे पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर किये जायें तो अत्योत्तम रहेगा। इन बृहद यज्ञों में आर्य सदस्यों, परिवारों के अतिरिक्त जन सामान्य को भी प्रेम पूर्वक आमन्त्रित किया जाना चाहिए। यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील विद्वान आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन साधारण को वैदिक, आध्यात्मिक तथा श्रेष्ठ विचारों के द्वारा सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके। अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियों या लघु सम्मेलनों अथवा कार्यशालाओं को आयोजित करें। समाज को सामाजिक बुराईयों से कैसे मुक्त करें, यदि इस विषय पर गोष्ठियाँ आयोजित की जायें तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

इस अवसर पर महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर सत्यार्थ प्रकाश कथा का आयोजन भी प्रेरणास्पद हो सकता है। इस कथा से सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारों का लाभ लोगों को धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सकता है।

अत्यन्त आवश्यक है कि महर्षि जन्म दिवस से लेकर ऋषि बोधोत्सव तक आर्य समाज भवनों पर विशेष रोशनी का प्रबन्ध किया जाये तथा प्रत्येक आर्य अपने-अपने घरों

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

को भी दीपावली की तरह से सजायें। प्रत्येक आर्य की छत पर ओ३म् ध्वज अवश्य ही लगा होना चाहिए।

४ मार्च से ७ मार्च तक प्रत्येक आर्य समाज से प्रभात फेरी निकाली जानी चाहिए जिसमें आर्यजन परिवार सहित भारी संख्या में प्रातः काल महर्षि तथा प्रभु भक्ति के गीत गाते हुए निकलें, हाथों में ओ३म् ध्वज लिए हुए भजन गाते हुए, जन समूह अवश्य ही आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। इस अवसर पर महर्षि तथा आर्य समाज से सम्बन्धित लघु साहित्य भी वितरित किया जा सकता है।

अपने-अपने आर्य समाज मंदिरों में या सार्वजनिक स्थानों पर भाषण या विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित करके समस्त प्रतियोगी बच्चों को पुरस्कार स्वरूप महर्षि जीवन चरित्र या सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार स्वरूप वितरित करें। आर्य शिक्षण संस्थाओं को इस प्रकार के आयोजन अपने-अपने विद्यालय के बच्चों के मध्य अवश्य ही आयोजित करने चाहिए।

क्षेत्रीय जनता को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य, स्वामी दयानन्द के चित्रों सहित कलेण्डर आदि भी स्थानीय जनता में निःशुल्क वितरित करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतने उपकार हम सबके ऊपर हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। सबसे अमूल्य उपकार वेदों के प्रति जागृति, वेद प्रचार व वेद मार्ग का रास्ता बताना है, क्योंकि वेद मार्ग पर चलकर हम सब कुछ श्रेष्ठ बना सकते हैं। बस आवश्यकता है कि हम महर्षि की भावना को समझें। यदि हम सच्चे आर्य समाजी हैं तो उनके मार्ग पर चलकर उनके समस्त कार्यों को आगे बढ़ायें। महर्षि जन्मोत्सव के इस पावन पर्व पर समस्त ऋषि भक्त आर्यजन रचनात्मक कार्यों के द्वारा आर्य समाज को उठाने का भरसक प्रयास करेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तत्कालीन समस्याओं के निवारण के साथ-साथ उस समय व्याप्त सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध पुरजोर आवाज उठाई थी। आज देश उस समय से कहीं अधिक विकराल रूप धारण कर चुकी सामाजिक बुराईयों यथा कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, गोहत्या, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न आदि से बुरी तरह त्रस्त है। वर्तमान परिस्थितियों में देश को तथा पूरे विश्व को नई दिशा देने का दायित्व आर्य समाज पर आता है क्योंकि समाज में व्याप्त इन बुराईयों की तरफ किसी संगठन या संस्था का ध्यान नहीं है और न ही इन बुराईयों के विरुद्ध कोई आवाज उठाता है। आम व्यक्तियों की निगाहें आर्य समाज के ऊपर लगी है। महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित पथ के पथिक बनकर हम सब मिलकर सामाजिक बुराईयों से त्रस्त समाज को मुक्ति दिला सकते हैं और जिसकी आज महती आवश्यकता भी है। क्रांतिकारी चरित्र, तेजस्वी स्वरूप और प्रभावशाली ढंग से एकजुट होकर, लोक कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से समाज के त्रस्त लोगों को साथ लेकर आर्य समाज के आन्दोलनात्मक स्वरूप को कार्य रूप में परिणित कर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव और निर्वाणोत्सव के शुभावसर पर हम सब दृढ़ संकल्पित हों। मेरा समस्त आर्य समाजों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, युवा संगठनों के अधिकारियों तथा सभी राष्ट्रभक्त व्यक्तियों से निवेदन है कि अपने-अपने स्तर पर उपर्लिखित सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध युद्ध स्तर पर जनजागरण का कार्य प्रारम्भ करें और प्रत्येक कार्यक्रम में चाहे वह यज्ञ हो, चाहे जन जागृति यात्रा हो, चाहे व्याख्यान हो, चाहे कार्यशालायें हों, प्रत्येक स्थान पर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई जाये। तो आईये! हम सब महर्षि जन्मोत्सव और बोधोत्सव पर संकल्प लें कि योजनाबद्ध ढंग से एकजुट होकर कार्य करते हुए महर्षि के मिशन को पूर्ण करेंगे तभी हमारा महर्षि जन्मोत्सव मनाना सार्थक हो सकेगा।

- प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

बारूद के ढेर पर बैठी दुनिया

– पं. उम्मेदसिंह विशारद

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी, महान समाजसेवी व दूरदर्शी थे इसीलिए उन्होंने स्वयं की मुक्ति का मार्ग न अपनाकर मानव समाज की सुख शांति हेतु समाज को प्राचीन, वैदिक, संस्कृति संस्कारों से जोड़ने का अथक प्रयास किया था।

वे ऐसा समाज देखना चाहते थे जिसमें न साम्राज्यवाद हो, न पूंजीवाद हो, न धर्म के झगड़े हो न जाति के, न धन की महत्ता हो न शास्त्र बल की। सारी दुनिया एक राष्ट्र हो मनुष्य मात्र की एक जाति हो। वर्ण व्यवस्था हर नर–नारी का अधिकार हो सम्मान हो। एक ईश्वर की पूजा हो, विवेक ही शास्त्र हो तथा विश्व एक कुटुम्ब हो। सभ्य समाज के द्वारा ऋषि दयानन्द नये संसार की तरफ दुनिया को ले जाना चाहते थे। इन विचारों को सदैव के लिए क्रियान्वित करने के लिए वह आर्य समाज संगठन बनाकर गये थे। यदि यह निर्दयी समाज विष द्वारा उनको शहीद न करता तो वह पूरे जीवन में संसार की काया पलट सकते थे। फिर भी वह बहुत कुछ कर गये।

मनुष्य की वर्तमान दुर्दशा का मूल कारण आर्थिक, राजनीतिक या भौतिक ही नहीं वरन् हृदयगत संकीर्णता है। यही कारण है आज, राजनैतिक विषमता, धार्मिक विषमता, भौतिक विषमता, पूजा पद्धति विशमता एवं संसार में परमाणु विषमता आदि से संसार बारूद के ढेर पर बैठा है।

यह वैज्ञानिक युग है विज्ञान क्षेत्र की प्रतिभायें इस क्षेत्र में विशेष रूप से अग्रणी हैं। शासकों को एवं औद्योगिकों को आयुद्ध, भौतिकी एवं प्रौद्योगिकी को इस स्थान पर प्रोत्साहन मिलकर चरम सीमा पर जा पहुँचा हैं आणविक हथियारों की होड़ से दुनिया में आज इन आयुधों का इतना विशाल भण्डार हो गया है कि अगला विश्व युद्ध अब आणविक हथियारों में ही लड़ा जायेगा। जिसमें सभी कुछ नष्ट हो जायेगा। समस्त संसार रेडियोधर्मिता के कारण मनुष्य के रहने योग्य नहीं रह जायेगा।

महान वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने कहा था कि चौथा विश्वयुद्ध पत्थर के हथियारों से लड़ा जायेगा। यह बात उस समय भले ही सामान्य ढंग से कही गई हो परन्तु वर्तमान स्थिति पर दृष्टि रखने से यह आभास हो जाता है कि इस कथन के पीछे गम्भीर आशय छिपा हुआ था। तकनीकि ही तकनीकि को खा जायेगी। ऐसी स्थिति में स्पष्ट है कि मनुष्य के पास पत्थरों के अतिरिक्त कुछ रह ही नहीं जायेगा।

प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध से लेकर आज तक संहारक अस्त्रों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। नये प्रकार के अस्त्रों में आश्चर्यजनक सुधार किये गये हैं। तीसरा विश्वयुद्ध हुआ तो उसमें इससे भी अधिक संहारक अस्त्रों का प्रयोग किया जा सकता है। इसका अनुमान लगाना कठिन है। कुछ देश वर्षों से अनुसंधान करने के उद्देश्य से उपग्रह छोड़ रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि अब ऐसे भी उपग्रह विकसित किये जा चुके हैं, जो इच्छानुसार कहीं पर भी बम गिरा सकते हैं। इन दिनों रासायनिक युद्धों की चर्चा जोरों पर है। सारे विकसित देशों में अणु परीक्षणों की होड़ लगी हुई है। कहते तो यह हैं कि विज्ञान और टेक्नालॉजी से मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के साधन जुटाये जा रहे हैं। किन्तु यह भी सत्य है, मनुष्यों की मौत का घातक इन्तजाम भी किया जा रहा हैं।

नये समाज की रूपरेखा मेरे विचारों से कैसी हो :– जातीय, राष्ट्रीय पक्षपात केवल एक धोखा है, क्योंकि ईश्वर ने हम सबको एक ही जाति में उत्पन्न किया है। फिर मनुष्य इस प्रकार के पक्षपातों के शिकार क्यों बनते हैं। ईश्वर ने मनुष्यों को इसलिए नहीं उत्पन्न किया है कि वह एक दूसरे का विनाश करते रहें। मानव, मानव से प्रेम रखना, देश से प्रेम रखना ही धर्म व विश्वास है। अर्थात् जाति व्यवस्था मानव समाज में भयंकर बारूद है तथा मानव जगत में शीत युद्ध को जन्म दे रही है।

नये युग के दो आधार अध्यात्म और विज्ञान :– सृष्टि रचना के साथ–साथ ईश्वर ने मनुष्यों के सर्वांगीण सुख, शांति के लिए वेद ज्ञान वैदिक धर्म, वैदिक व्यवस्था और वैदिक ईश्वरीय धर्म तथा सृष्टिक्रम विज्ञान के अनुसार दिये हैं, क्योंकि ईश्वर सत्य है, ईश्वरीय विज्ञान सत्य है। इसलिए विज्ञान को सत्य की संतान कह सकते हैं यदि गम्भीरता से विचार किया जाये तो विज्ञान का दृष्टिकोण सत्य का रहस्योदघाटन करना ही था किन्तु अन्तः स्वार्थों ने विज्ञान की उन्नति को मानवों का संहार का केन्द्र बना दिया है। इस ईश्वरीय व्यवस्था के उल्लंघन से ही संसार बारूद के ढेर पर बैठा है।

आध्यात्म धर्म सार्वभौम है। वह देश, जाति और काल के अन्तर में कटता बंटता नहीं और न उसमें उतार–चढ़ाव आते हैं। धर्म को सार्वजनीन, सार्वकालीन, सार्वभौम और शाश्वत सनातन कहा जा सकता है। सम्पूर्ण मानव जगत के लिए ईश्वर ने एक ही धर्म दिया है वह है वैदिक धर्म।

एक ओर संसार के राष्ट्रों में विचार शक्ति, धन शक्ति, कथित विज्ञान की शक्ति की खींचतान चल रही है। वित्तेषणा, लोकेषणा और निजी एषणाओं में संसार के मुल्क बुरी तरह ग्रस्त हो रहे हैं। संसार की सुख शांति की ठेकेदारी आज चन्द मुट्ठी भर राजनैतिक नेताओं के हाथ में चली गई है। वे चाहे तो जरा सी बात के लिए लाखों मनुष्यों को मक्खी की तरह मरवा सकते हैं।

इस अन्धकार युग का प्रारम्भ पांच हजार वर्ष पूर्व से प्रारम्भ हो गया था और उसने अब परम्परा का रूप धारण कर लिया है। किन्तु ईश्वर की इच्छा व मनुष्यों का प्रबल सत्य पुरुषार्थ सम्मिलित रूप से आश्चर्यजनक परिवर्तन कर सकता है। उसकी पूर्ति भले ही कठिन हो लेकिन असम्भव नहीं है।

विनाश लीला टाली जा सकती है :– जब तक मनुष्यों के चिन्तन में भ्रष्टता रहेगी तब तक मानवीय समुदाय में परिवर्तन आने वाला नहीं है। समाज का वर्तमान ढर्रा तभी बदल सकता है जब समाज में अग्रणी बुद्धिजीवी जाग जावें और संगठन के रूप में जागरूकता विकसित हो।

आज धर्म, सम्प्रदायों में सभी मार्गदर्शकों को तथा आर्य समाज संगठन को आगे आकर तमाम अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों, उग्रवाद, अलगाववाद विचारधारा, वर्गवाद, जातिवाद, कुप्रथाओं आदि के निवारण के लिए एक स्वर में आवाज उठानी होगी।

मानव जाति आज जीवन मरण के झूले में झूल रही है हर ऋषि सन्तान मानवीय गरिमा के प्रहरी को अपने मानव समाज को डूबने से बचाने हेतु पवित्रतम कार्य का उत्तरदायित्व निर्वाह करना होगा। हमें उन उत्तरदायित्व के निर्वाह के लिए तत्पर होना ही चाहिए जो इस आपत्तिकाल आपत्ति धर्म की तरह हमारे कन्धों पर लद गये हैं, समय की युग की पुकार यहीं है इस समस्या पर चिन्तन करना चाहिए।

– वैदिक प्रचारक
गढ़ निवास– मोहकमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
मो.:–9411512019

सैनिक (हनुमनथप्पा) उवाच

अन्न देश का खाया जिसने और पिया है पानी,
वही मनुज विश्वासघात से कर बैठा नादानी।
राष्ट्रधर्म की मर्यादा को जो भी लांघ गया है,
लांछन है उस पर तो निश्चित वह तो व्यर्थ जिया है।
उसकी आत्मा मरी हुई, उसका ईमान डिगा है,
राष्ट्र चेतना के सम्मुख वह बिल्कुल नहीं सगा है।
दूर सियाचिन की बर्फीली चोटी बोल रही है,
भारत माता की रक्षा हित मस्ती डोल रही है।
जिन वीरों ने प्राण समर्पित निज जीवन दे डाला,
बर्फीले झंझावातों से पड़ा बहुत ही पाला।
आहा उद्भट वीर एक यह सपना देख रहा था,
हनुमनथप्पा निजी वीरता कर उल्लेख रहा था।
पैंतिस फीट की गहराई हिम चादर तान रहा था,
उसको केवल अपनी ही ड्यूटी का भान रहा था।
बोल रहा जो मौन हुआ अपनी ही मौनी भाषा,
मेरे देशवासियो, सुन लो सुना रहा परिभाषा।
सैनिक का तो जीवन ज्यों सब परिस्थितियों में रहना,
आग बरसती हो चाहे हिमखण्डों पर ही चलना।
देशवासियो, खुश रहना तुम, यह सन्देश सुनाता,
उसे मानकर चलता मैं जो मेरा देश बताता।
बार–बार जन्मूँगा मैं तो पुनर्जन्म पाऊँगा,
सेवा करूँ देश की अपने राष्ट्र गीत गाऊँगा।
शायद ऐसा कह उसने प्राणों को छोड़ दिया था,
निज अदम्य साहस से क्या मृत्युल–रथ मोड़ दिया था।
देश विरोधी गतिविधियों का करना नहीं तमाशा,
सैनिक के जीवन जैसी ही हो अपनी अभिलाषा।
भारत माँ निर्विघ्न रहो संकल्पमयी यह आशा,
सैनिक अपने शोणित से ही लिखता है परिभाषा।
कभी राष्ट्र की मर्यादा को भंग न होने देंगे,
कभी अराष्ट्रीय बातों से वह रंग न भरने देंगे।
राष्ट्र द्रोहियों को निश्चित ही दंडित करना होगा,
जो भी बने समर्थक उनको भी तो भरना होगा।

– वरिष्ठ कवि – बाबूराम शर्मा विभाकर
लाल क्वार्टर, गाजियाबाद–201001,
मो.:–9350451497

कन्या भ्रूण हत्या कारण व निवारण

– डॉ. प्रमोद योगार्थी

नारी हत्या मत करो, नारी नर की खान।
नारी से नर होत हैं, ध्रुव प्रहलाद समान।।

जन्मने से पहले ही उदर में कन्या को मार देना कन्या भ्रूण हत्या कही जाती है। वर्तमान में यह एक भयानक सामाजिक बुराई हो गई है। यद्यपि यह बुराई हमारे समाज में पहले भी थी। परन्तु आज इस बुराई ने जघन्य अपराध का विकराल रूप धारण कर लिया है। इतिहास साक्षी है कि 30–40 वर्ष पहले एक तो कन्या के पैदा होने पर हत्या करने की कुप्रथा कहीं–कहीं प्रचलित थी परन्तु वर्तमान में यह पाप कन्या पैदा होने से पूर्व ही किया जा रहा है। दो–ढाई माह के कन्या भ्रूण को उदर में ही मार दिया जाता है। याद रहे कि पहले बहुत कम मात्रा में यह पाप किया जाता था। अब बहुत मात्रा में इस जघन्य अपराध को किया जा रहा है। पहले अशिक्षित, नासमझ परिवारों में यह अपराध होता था। आज पढ़े–लिखे उन्नतिशील, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवारों में भी इस पाप को बिना संकोच के किया जा रहा है।

विज्ञान व मेडीकल साइन्स ने अल्ट्रासाउण्ड मशीन तो इसलिए बनाई थी कि नारी के उदर में पलने वाली सन्तान की जांच परख कर ली जाये कोई विकार है तो उदर में ही उपचार कर लिया जाये और सन्तान को स्वस्थ, बुद्धिमान तन्दुरूस्त बनाया जाये परन्तु इस मशीन का दुरुपयोग होने लगा। उदर में लिंग की जानकारी करने लग गये हैं और कन्या के रूप में भ्रूण का पता लगते ही उसकी हत्या करा दी जाती है। यह विज्ञान का दुरुपयोग और नीच कर्म है। वैदिक साहित्य में कन्या भ्रूण हत्या को ब्रह्म हत्या से भी बड़ा पाप माना गया है। कन्या भ्रूण हत्या का कोई प्रायश्चित भी नहीं है। यह अक्षम्य और भयंकर अपराध है जो घोर नरक में ले जाने वाला पापकर्म माना गया है।

उदर में कन्या भ्रूण को कटते और मरते हुए देखें तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अमेरिका में सन् 1994 ई. को एक सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में डॉ. निथनसन ने एक अल्ट्रासाउण्ड फिल्म दिखाई जो कन्या भ्रूण को मारते समय की थी। उस फिल्म में बताया गया था कि एक 10–12 सप्ताह का भ्रूण है। उसको मारने के लिए गर्भाशय में एक औजार भेजा गया। जैसे ही यह औजार गर्भाशय में गया और गर्भाशय की दीवार से छुआ तो गर्भाशय का भ्रूण सिकुड़ने और कांपने लगा तथा अपने बचाव की कोशिश करने लगा। उस कन्या भ्रूण के हाथ, पैर, कमर, गाजर मूली की तरह काट दिये गये। वह भ्रूण तड़पने लगा और फिर उस औजार ने सिर को पकड़ कर जोर से दबाकर अखरोट की भांति तोड़ दिया और मूंक चीख के साथ उस कन्या भ्रूण का प्राणान्त हो गया।

इसको देखकर एक क्रूर से भी क्रूर इन्सान के अन्दर दया आ जाती है। परन्तु माँ–बाप और वह डॉक्टर जो इस अपराध को कर रहे हैं उन सबकी मानवता मर चुकी होती है। माँ की ममता और पिता का प्यार सूख गया होता है। लोभ लालच की आंधी ने डॉक्टर को हत्यारा बना दिया है। याद रहे इस अपराध का एक दुष्परिणाम तो प्रत्यक्ष रूप से सामने आ ही गया है कि हमारे देश में हजारों नवयुवक जो विवाह करना चाहते हैं उनको वधु के रूप में कोई लड़की नहीं मिल पा रही है। कन्या भ्रूण हत्या के कारण लड़कों की संख्या लड़कियों की संख्या से अधिक हो गई है। ये नौजवान उच्छृंखल और अन्य अपराध की दुनियां में कदम बढ़ाने लगे हैं। देश में अराजकता व भय का वातावरण पैदा करने लगे हैं। अन्य समस्याएँ भी अप्रत्यक्ष रूप से जन्म ले चुकी हैं और आगे और भी लेंगी। क्योंकि पापकर्म का फल तो अवश्य ही भोगना पड़ेगा।

इस अपराध के पीछे अनेक कारण हैं। कुछ कारणों का यहाँ विचार किया जा रहा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस समस्या के मूल में दहेज प्रथा जो अर्थ से जुड़ी हुई है एक प्रमुख कारण है। आज की तिथि में एक लड़की के सामान्य विवाह के लिए 6–7 लाख रुपये न्यूनतम चाहिए। इस विवाह को निम्न श्रेणी का किफायती विवाह कहा जायेगा। विचार करने वाली बात यह है कि जिसकी मासिक आय 10–12 हजार रुपये मात्र हो ऐसा परिवार दैनिक खर्च करते हुए विवाह के निमित्त कैसे धन का संग्रह करेगा? भोजन, वस्त्र, मकान, दवा, शिक्षा, पारिवारिक व रिश्तेदारी के हिसाब से लेन–देन का खर्च जो आवश्यक है इन सबको पूरा करना है और दहेज के लिए भी रुपयों को बचाना है। यह चिन्ता सदैव बनी रहती है।

आज जो कन्या पैदा हुई है लगभग 25 वर्ष बाद जब विवाह करेंगे तो उस 6–7 लाख रुपये के स्थान पर 30–35 लाख रुपये की आवश्यकता होगी तब जाकर सामान्य विवाह कर सकेंगे। इतनी बड़ी राशि को एकत्र करने के लिए माता–पिता को न्यूनतम सवा लाख से डेढ़ लाख रुपये तक प्रतिवर्ष एकत्रित करना अनिवार्य होगा जो सामान्य परिवार के लिए बहुत ही कठिन काम है।

दूसरी समस्या कन्या की सुरक्षा से सम्बन्धित है जैसे युवा लड़के निर्द्वन्द्व, बिना किसी विशेष चिन्ता के दूर दराज रात या दिन कहीं भी किसी भी स्थान पर भेज दिया जाता है वैसे युवा कन्या को देर सवेर घर से बाहर अकेली भेजने में सर्वथा डर लगा रहता है। अब तो अकेली बेटी को घर में छोड़ा जाना भी कठिन हो गया है। विशेष पढ़ाई के निमित्त किसी दूसरे शहर, छात्रावास, विश्वविद्यालय, पी. जी. हॉस्टल जैसे स्थानों पर लड़की को भेजने पर भी उसकी सुरक्षा को लेकर सदैव चिन्ता बनी रहती है। कहीं निर्भया जैसा काण्ड घटित न हो जाये।

इस प्रकार व्यक्ति का मन सोचता है कि कन्या को जन्म देकर पालो, तिल–तिल कर कष्ट सहते हुए बेटी की पढ़ाई लिखाई पर अच्छा खासा धन खर्च करो, इसके साथ ही इस प्रकार की चिन्ता बनी रहती है कि युवा बेटी पर किसी की मनहूस नजर ना पड़ जाए, कहीं शारीरिक प्रताड़ना की शिकार ना हो जाए, घर परिवार की इज्जत मिट्टी में ना मिल जाये यदि प्रयत्न करके इन उपरोक्त कारणों से मुक्ति मिल भी जाये तो अन्त में बेटी के विवाह की चिन्ता सताने लगती है। विवाह योग्य घर वर ढूंढ़ने में बड़ी मुश्किलें शुरू हो जाती हैं। विवाह के बाद यह चिन्ता रहती है कि बेटी अपने पतिकुल में सुखपूर्वक रहेगी कि नहीं रहेगी इसके साथ ही वर के परिवार वालों का रूखा व्यवहार भी सामने आता है, इस तरह के अनेक विचार बेटी के परिवार वालों के मन में उठते रहते हैं और मन सोचता है कि अच्छा हो लड़की पैदा ही ना हो। यहीं से कन्या भ्रूण हत्या की योजना बनने लगती है।

कन्या को दुहिता भी कहा जाता है। कुछ नासमझ लोगों ने दुहिता शब्द का अर्थ दुखी करना लिखा है। वे कहते हैं कि कन्या तो दुःख देने के लिए ही होती है :–

जातेति कन्या महती हि चिन्ता, कस्मै प्रदेयेति महान्वितर्कः।
दत्ता सुखं यास्यति वा न वेत्ति, कन्यापितृत्वं खलु नाम कष्टम्।।

कन्या का उत्पन्न होना ही महान् चिन्ता का विषय है। फिर उसके यौवन में पदार्पण करने पर इसे 'किसको दिया जाये' यह प्रश्नचिन्ह उभरता है। विवाह हो जाने पर भी 'उसे सुख मिलेगा या नहीं' यह चिन्ता बनी रहती है। सचमुच कन्या का पिता होना ही बहुत कष्टदायक है। यह कुछ बातें हैं जो कन्या भ्रूण हत्या के पीछे काम करती हैं।

निवारण :– आईये! इस विकट समस्या व सामाजिक बुराई के उन्मूलन के निमित्त संक्षेप में कुछ विचार करते हैं।

1. सर्वप्रथम तो माँ–बाप को अपने मन से 'नारी अबला है' इस विचार को सर्वथा निकाल देना चाहिए। आज नारी हर क्षेत्र में पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है। वह घर की चार दिवारी में ही बन्द होकर चूल्हें–चौके तक ही सीमित नहीं रह गई है, अपितु आज नारी वैज्ञानिक, राजनैतिक, व्यापारिक, शैक्षणिक जगत में अपने कदम बढ़ा चुकी है। सुरक्षा की दृष्टि से नभ सेना, जल सेना, थल सेना, सीमा सुरक्षा बल, आन्तरिक सुरक्षा बल इन सबमें सैनिक से लेकर बड़े–बड़े अधिकारियों के रूप में अपना परचम फहरा चुकी है। कल्पना चावला की तरह दूसरे ग्रहों

शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश तेलंगाना के तत्वावधान में आयोजित

चार दिवसीय सपरिवार वैदिक प्रशिक्षण शिविर

7 से 10 जनवरी, 2016 तक पंडित नरेन्द्र भवन में सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश की अन्तरंग सभा के निर्णयानुसार चार दिवसीय सपरिवार वैदिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 7 से 10 जनवरी, 2016 तक पंडित नरेन्द्र भवन हैदराबाद में किया गया। बढ़ते हुए भौतिकवाद को ध्यान में रखते हुए यह महसूस किया गया कि वैदिक सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा परिवारों को संस्कारित कर ही की जा सकती है। अतः आचार्य सोमदेवजी शास्त्री मुम्बई से विचार–विमर्श कर उनके परामर्शानुसार सपरिवार वैदिक प्रशिक्षण शिविर के आयोजन का निर्णय लिया गया। इस शिविर को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित कर महिलाओं को विशेष लाभ पहुंचाने की दृष्टि से गुरुकुल हाथरस की आचार्या डॉ. पवित्रा विद्यालंकार जी को तथा सुधानन्द जी सरस्वती उड़ीसा तथा पंडित धर्मपाल जी शास्त्री, मेरठ और भजनों के माध्यम से चेतना पैदा करने के लिए डॉ.

कैलाश कर्मठ जी, कोलकाता और स्थानीय विद्वानों को आमंत्रित किया गया ताकि आवश्यकता अनुसार समय–समय पर तेलगु भाषा में संक्षिप्त अनुवाद किया जा सके। प्रातः 4 बजे से प्रारम्भ होकर रात के 10 बजे तक निर्दिष्ट समयानुसार विभिन्न विषयों पर शिविर निरन्तर चलता रहा। प्रातः पुरुषों के लिए अलग और महिलाओं के लिए अलग आसन–प्राणायाम आदि की कक्षाएं लगाई जाती रही। सायंकाल में भी स्वास्थ्य सम्बन्धित जानकारी के लिए आयुर्वेद के विशेषज्ञ डॉ. कैलाश जी कर्मठ कक्षा लिया करते थे। इसी प्रकार व्यावाहारिक विषयों पर स्वामी सुधानन्द जी एवं डॉ. पवित्रा विद्यालंकार जी कक्षाएं लिया करती थी। आध्यात्मिक, सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक विषयों पर आचार्य सोमदेव जी शास्त्री एवं धर्मपाल जी शास्त्री विशेष रूप से कक्षाओं का आयोजन किया करते थे। आस्तिकता और परमात्मा में लोगों की श्रद्धा बढ़े इसके लिए ध्यान मुद्रा की कक्षायें भी आयोजित की जाती रही। शिविरार्थियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो इसका पूरा–पूरा ध्यान रखा गया। इस शिविर में 200 स्थायी शिविरार्थियों के साथ–साथ शहर के दैनिक शिविरार्थी लगभग 50–60 के मध्य प्रतिदिन भाग लिया करते थे। शिविर आयोजकों के लिए एक अद्भुत अनुभव रहा और शिविरार्थियों के लिए बहुत ही उत्साहजनक तथा कई प्रकार के अनुभवों को देने वाला अद्भुत शिविर रहा। इस शिविर में आन्ध्र, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश व उड़ीसा से शिविरार्थियों ने भाग लिया। अंतिम दिन शिविरार्थियों में इतना उत्साह था कि सम्पूर्ण परिवार का शिविर आयोजन करने की मांग उठने लगी। उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए सभा प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने यह प्रस्ताव किया कि अगर इस शिविर में उपस्थित सारे शिविरार्थी यह जिम्मेवारी लेंगे कि 1000 से 1200 शिविरार्थियों को इकट्ठा करेंगे तो जरूर अगले 6 से 8 महीनों के बीच सम्पूर्ण परिवारों का शिविर आयोजित किया जायेगा और पूरी व्यवस्था की जायेगी तथा अलग–अलग आयु वालों के लिए अलग–अलग कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। हर्षोल्लास के मध्य सभी के सहमति से अगला शिविर आयोजन करने की घोषणा की गई। सम्पूर्ण शिविर की व्यवस्था महामंत्री हरिकिश वेदालंकार सभा के सभी अधिकारीगण, पंडित प्रियदत्त शास्त्री, डॉ. वसुधा, अरविन्द शास्त्री, धनलक्ष्मी राजारामजी, श्री बसरेड्डी जी और कार्यालय के समस्त कर्मचारीगण रात–दिन काम कर शिविर को सफलता पूर्वक सम्पन्न होने में पूर्ण सहयोग दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश तेलंगाना के पूर्व प्रधान व सभा के वरिष्ठतम् नेता

डॉ. टी. वी. नारायणा जी पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित

सभा के प्रधान पद पर रहते हुए पिछले कई वर्षों से आर्य समाज के साथ–साथ समाज सुधार के कार्य में डॉ. टी. वी. नारायणा जी ने विशेष कार्य कियाहै। आर्य समाज बोलारम सिकन्दराबाद में स्वामी सोमदेवजी के द्वारा शिक्षा ग्रहण कर दिन–प्रतिदिन सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में अनेकों–अनेक पायदानों को पार करते हुए अप्रतिम सेवाओं को प्रदान किया है। उनका मानना है कि दलित व पिछड़े वर्ग के लोगों को आर्य समाज ने समाज के मुख्यधारा में सवर्ण लोगों के बराबर लाकर खड़ा किया। उनका जीवन आर्य समाज से बना और पद्मश्री से पुरस्कृत होने के बाद उन्होंने कहा कि आर्य समाज ने हमें जीवन दिया है तथा उसी की बदौलत मैं पद्मश्री से पुरस्कृत हुआ हूँ। आर्य समाज की विचारधारा ही वर्तमान में देश की व विश्व की समस्याओं का समाधान कर सकती है। स्वामी दयानन्द को मैं विनम्रतापूर्वक नमन करता हूँ।

डॉ. टी. वी. नारायण जी, श्री श्री रविशंकर जी को सम्मानित करते हुए

'धार्मिक अंधविश्वासों का कारण सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय न करना'

–मनमोहन कुमार आर्य

अंधविश्वास को किसने जन्म दिया है? विचार करने पर ज्ञात होता है कि अविद्या और अज्ञान से अन्धविश्वास उत्पन्न होता है। अन्धविश्वास दूर करने का उपाय क्या है, इस पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि ज्ञान व विद्या से अन्धविश्वास दूर होते हैं। ज्ञान व विद्या कहां मिलती है? **इसका उत्तर है कि सदग्रन्थों का स्वाध्याय करने से ज्ञान व विद्या की प्राप्ति होती है।** अतः अन्धविश्वास से बचने वा रक्षा के लिये सदग्रन्थों का स्वाध्याय आवश्यक है। सद्ग्रन्थ कौन से हैं और कौन से ग्रन्थ सद्ग्रन्थ नहीं है, इसका निर्धारण साधारण लोग नहीं कर सकते अपितु छल–कपट–स्वार्थ–अविद्या रहित शुद्ध हृदय वाले विद्वान ही कर सकते हैं। विद्वानों की अनेक श्रेणियां हैं। पुराण व अन्य मत–मतान्तरों के ग्रन्थों के अध्ययन से अज्ञान व अविद्या उत्पन्न होने से अन्धविश्वास बढ़ते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम समाज व देश विदेश में होने वाली नाना घटनाओं में पाते रहते हैं। साधारण मनुष्यों के स्वाध्याय का सबसे उत्तम ग्रन्थ कौन सा है? इसका उत्तर है कि जिसमें अज्ञान, अविद्या व अन्धविश्वास से युक्त भ्रान्तिपूर्ण बातें न हों तथा इसके विपरीत ज्ञान व विद्या उत्पन्न करने वाली बातें हो उसे ही हम सद्ज्ञान युक्त ग्रन्थ की संज्ञा दे सकते हैं। ऐसे वेद, ज्योतिष, दर्शन, उपनिषद, स्मृति आदि अनेक ग्रन्थ हैं परन्तु संसार में सबसे उत्तम व सरल ग्रन्थ एकमात्र **"सत्यार्थ प्रकाश"** ही है।

प्रश्न किया जा सकता है कि सत्यार्थ प्रकाश ही अन्धविश्वासों से मुक्त ग्रन्थ है, इसका क्या प्रमाण है? इसका प्रथम उत्तर तो यह है कि यह एक सत्यान्वेषी महापुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती का लिखा हुआ ग्रन्थ है जिन्होंने अपना सारा जीवन सत्य की खोज, योग व ईश्वरोपासना तथा अध्ययन व अध्यापन में अर्पित किया तथा जो समाज, देश व मनुष्यमात्र सहित प्राणीमात्र के कल्याण की भावना से भरे हुए थे। यह महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन सच्चे ईश्वर, मृत्यु से बचने के उपायों, धर्म, समाज, देशहित की सभी बातों की खोज में लगाया और वह उसमें सफल हुए थे। वह इस कार्य में इसलिए सफल हो सके कि उन्हें वेद और वैदिक व्याकरण के सच्चे गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती मिले जिनका सारा जीवन ही सत्य की खोज व भ्रान्तिपूर्ण विषयों से सम्बन्धित सत्य के निर्णय में व्यतीत हुआ था। दोनों गुरू शिष्य ने मिलकर 3 वर्ष तक सच्चे ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति के स्वरूप तथा धर्म कर्म विषयक सभी विषयों पर गम्भीरता से चिन्तन किया। उनका मार्गदर्शक ईश्वरीय ज्ञान वेद था। वेद ईश्वरीय ज्ञान कैसे है? इसका एक उत्तर तो यह है कि यह संसार की सबसे प्राचीनतम पुस्तक होने के साथ ही सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को सीधे ईश्वर से इसका ज्ञान मिला था। सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में बड़ी संख्या में युवा स्त्री–पुरुष उत्पन्न हुए थे। माता–पिता आरम्भ में होते नहीं हैं, अतः सृष्टिकर्त्ता ईश्वर बिना माता–पिता के अमैथुनी सृष्टि करता है जो अण्डज व जरायुज न होकर उद्भिज सृष्टि के अनुरूप होती है। इन उत्पन्न मनुष्यों को अपने जीवन के कर्तव्यों को जानने, समझने व करने के लिए भाषा सहित ज्ञान की आवश्यकता थी। ज्ञान व भाषा वर्तमान में सभी को माता–पिता व आचार्यों से मिलती है। सृष्टि के आरम्भ में यह तीनों ही नहीं थे। केवल एक चेतन सत्ता ईश्वर थी जिसने इस संसार को बनाया था। दूसरी कार्य प्रकृति वा सृष्टि थी जिससे यह संसार बना था परन्तु जड़ व ज्ञानहीन होने से यह मनुष्यों को ज्ञान देने में सर्वथा असमर्थ होती है।

यह संसार ज्ञान व शक्ति के समन्वय तथा तप–पुरूषार्थ का परिणाम है जिसमें प्रकृति की भूमिका उपादान कारण के रूप में होती है। संसार को बनाने हेतु जिस ज्ञान की आवश्यकता थी उसमें सब सत्य विद्यायें सम्मिलित थी। संसार की विशालता को देखकर उस चेतन व ज्ञानवान सर्वज्ञ शक्ति की विशालता व सर्वव्यापकता के भी दर्शन होते हैं। ज्ञानवान व सर्वव्यापक होने से उस शक्ति ईश्वर को सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मनुष्यों को ज्ञान देने में कोई कठिनाई नहीं थी। अतः उसने मनुष्यों की आत्माओं में अपने सर्वान्तर्यामी स्वरूप से प्रेरणा द्वारा ज्ञान को स्थापित कर दिया। उस ज्ञान के कारण मनुष्य परस्पर बोलने लगे व आपस में सभी प्रकार के व्यवहार होने आरम्भ हो गये। सृष्टि को बनाने वाला ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् सर्वज्ञानमय होने के कारण उसका दिया हुआ वेद भी सब सत्य विद्याओं से युक्त है। इसमें अज्ञान का लेश भी नहीं है। इन तथ्यों का साक्षात्कार विद्यासम्पन्न तथा योग सिद्ध विद्वान समाधि अवस्था में करते हैं। महर्षि दयानन्द ने भी वेद व ईश्वर में निहित सत्य ज्ञान का साक्षात्कार किया और उसके आधार पर ही उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ की रचना की। अपने मन व मस्तिष्क से मत–मतान्तरों की बातों, पूर्वाग्रहों व निजी हितों से मुक्त होकर सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से सत्यार्थप्रकाश में निहित विषयों की सत्यता का साक्षात ज्ञान होता है जिसकी साक्षी स्वयं हमारी अर्थात् पाठक की आत्मा देती है। सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर उसे समझ लेने पर सभी मत–मतान्तरों की अच्छी व बुरी बातों का ज्ञान मनुष्यों को हो जाता है जिससे वह अन्धविश्वासों से मुक्त व विद्या व ज्ञान से युक्त हो जाते हैं। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के स्वरूप के ज्ञान सहित अध्ययनकर्ता को अपने कर्तव्यों का ज्ञान भी हो जाता है। हमारे इस विवेचन से यह ज्ञात हुआ कि ईश्वर ज्ञान का देने वाला आदि स्रोत है। इसके बाद जो भी ग्रन्थ व पुस्तकें अस्तित्व में आई हैं वह सब ऋषि–मुनियों व साधारण मनुष्यों द्वारा रचित पुस्तकें हैं। जिन ग्रन्थों में ईश्वर व सत्पुरूषों की प्रशंसा है, वह पठनीय हैं और जिसमें एक दूसरे की निन्दा व भ्रान्तियुक्त कथन व सृष्टिक्रम के विरूद्ध अविश्वसनीय तर्क व युक्ति विरूद्ध बातें हैं वह पुस्तकें व ग्रन्थ साधारण मनुष्यों द्वारा लिखित होने से त्याज्य हैं। वह प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं। ऐसे ग्रन्थ विष सम्पृक्त अन्न के समान होते हैं। महर्षि दयानन्द ने समस्त वैदिक साहित्य से ज्ञान का आलोडन कर प्राप्त हुए सत्य ज्ञान को सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में प्रस्तुत किया था। इसे पढ़कर निष्पक्ष भाव से इसको संसार का अन्धविश्वास निवारण व सभी आध्यात्मिक व सांसारिक सत्य व यथार्थ ज्ञान को प्रदान करने वाला अपूर्व सर्वोत्तम ग्रन्थ कहा जा सकता है।

अतः सफल जीवन व्यतीत करने के लिए किसी भी मत, सम्प्रदाय व पन्थ में न फंस कर यदि सत्यार्थ प्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य को पढ़ा जाये तो मनुष्य अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित अन्धी श्रद्धा व आस्था से भी बच सकता है। जो व्यक्ति ईश्वर से प्राप्त मनुष्य जीवन में सत्य को जानने व उसे धारण करने का प्रयत्न नहीं करता व परम्परागत मतों को आंख मूंद कर यथावत् स्वीकार कर लेता है, उसका जन्म लेना इसलिए व्यर्थ सिद्ध होता है कि परमात्मा से प्राप्त सत्य व असत्य का विवेचन करने के लिए प्राप्त बुद्धि का उसने सदुपयोग नहीं किया है। वैदिक विचारधारा जिसका पूरा पोषण सत्यार्थ प्रकाश में हुआ है, उसके अनुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य अभ्युदय व निःश्रेयस (मोक्ष प्राप्ति) है। इन दोनों की प्राप्ति वैदिक विचाराधारा के अनुसार जीवनयापन कर **'धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष'** के रूप में होती है। अतः जीवन के कल्याण व सफलता के लिए सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य के इतर ग्रन्थों का सजग होकर विवेक पूर्वक अध्ययन करना चाहिये। यह भी बताना है कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर एक माह में जो अधिकांश ज्ञान प्राप्त होता है वह समस्त वैदिक साहित्य के द्वारा कई वर्षों में होता है। अतः सत्यार्थप्रकाश वैदिक वांग्मय का सार व अर्वाचीन मत–मतान्तरों के यथार्थ स्वरूप का परिचय कराने वाला दुर्लभ व मूल्यवान ग्रन्थ है। एक कवि की दो पंक्तियां लिखकर इस लेख को विराम देते हैं।

भरोसा कर तू ईश्वर पर
तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जायेगा,
तुझे रोना नहीं होगा।।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

पृष्ठ–3 का शेष

कन्या भ्रूण हत्या कारण व निवारण

पर भी यात्रा करने में सक्षम हो चुकी हैं। आज रानी लक्ष्मबाई, दुर्गावती आदि वीरांगनाओं की भांति अपने शौर्य का इतिहास रच रही हैं। अतः कन्या के माता–पिता को चाहिए कि वे अपनी बेटी में इन तमाम गुणों को देखें और अच्छी शिक्षा देने का प्रयास करें। कन्या को लेकर निराशा के विचार कदापि ना आने दें। कन्या को सशक्त और योग्य बनायें।

2. बेटी के प्रति समाज को अपनी अवधारणा बदलनी होगी। आज हमारा समाज सोचता है कि अर्थो हि कन्या परकीय एव बेटी पराया धन है, बेटी गृहस्थ का कड़वा फल है, बेटी से वंश बेल नहीं चला करती इस प्रकार की तुच्छ सोच बदलनी होगी। बेटी पैदा होते ही माँ–बाप को तरह–तरह के कटु व निराशायुक्त वाक्य सुनने को मिलते हैं। कोई तो कहता है कि ये तो 50 लाख की डिग्री आ गई। दूसरी व तीसरी कन्या पैदा हो जाये तो परिवार व समाज पर मानो पहाड़ टूट पड़ा। समाज के लोग माँ–बाप को बेचारा घोषित कर देते हैं। ऐसा वातावरण पैदा करते हैं कि माँ ने बेटी क्या पैदा की मानो किसी की हत्या कर दी। माँ अपने आपको अपराधी अनुभव करने लगती है। अतः समाज को बेटियों के प्रति अपनी इस प्रकार की सोच बदल कर सकारात्मक सोच बनानी होगी। कटु और व्यंग्य वाक्यों से परहेज करना होगा। निराशा की जगह हर्ष और प्रसन्नता दिखानी होगी। माँ को ढेर सारी बधाईयाँ देनी होगी। बेटी की माँ को परिवार में अधिक से अधिक सम्मान देना होगा। जिससे बेटी के जन्म से माँ गौरव का अनुभव करे।

3. जो इस अपराध से जुड़े हुए होते हैं विशेषकर माँ–बाप, डॉक्टर व परिवार के अन्य सदस्य इन सबको पाप–पुण्य की परिभाषा समझनी होगी। धर्म–अधर्म को जानना होगा। पुण्य से सुख और पाप से दुख मिलता है इस सच्चाई को समझकर पाप से बचना होगा। हिंसा करना पाप है जिसका फल भयंकर कष्ट होता है। भ्रूण को नष्ट करना जघन्य पाप व अपराध है। माँ–बाप, डॉक्टर तथा इससे जुड़े हुए जो भी होते हैं उनको इसका दुःखदाई फल अवश्य भोगना होगा। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् अर्थात् शुभ–अशुभ कर्म का फल अवश्य मिलेगा। इस रहस्य को जानना होगा।

स्मरण रहे बेटी के पालने में जो थोड़ा बहुत कष्ट होता है उससे कई गुणा कष्ट व दारूण दुःख कन्या भ्रूण हत्या कराने से मिलता है। यह जघन्य पाप व अपराध है जिसका फल अत्यन्त कष्टकारी होता है। डॉक्टर को सोचना चाहिए कि किसी की जान बचाने के लिए आप डॉक्टर बने हैं ना कि थोड़े से रुपयों के लालच में पड़कर प्राण हरण करने के लिए। यह धन तो अनित्य और नष्ट होने वाला है। इस धन के लोभ से कन्या भ्रूण हत्या करना सर्वथा नासमझी है। ऐसा विचार डॉक्टर करें और संकल्प करें कि मैं इस पाप को कभी नहीं करूँगा।

4. कन्या व नारी के महत्त्व को भी समझना होगा। कन्या शब्द में पवित्रता का भाव ओत–प्रोत है। यह शब्द कन् दीप्तौ इस संस्कृत धातु से सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है जो घर को चमका दे। अपने गुणों से घर को प्रकाशित कर दे उसका नाम कन्या है। कन्या के प्रति यह भाव परिवार के प्रत्येक सदस्य के मन में होने चाहिए। इन भावों से कन्या भ्रूण हत्या की भावना नष्ट होने लगेगी।

मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में कहा है –

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।356।।

जिस परिवार व समाज में नारी का आदर सत्कार होता है वहां दिव्य गुण वाली सन्तानें जन्म लेती हैं। जहाँ इनका अनादर होता है वहाँ सारी क्रियाएँ असफल होती हैं।

पितृभिर्भातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः।।मनुस्मृति 3/55।।

अत्यन्त कल्याण चाहने वाले पिता, भाई, पति, देवर आदि समस्त परिवार द्वारा नारियों व बेटियों का सत्कार वस्त्राभूषणादि से किया जाना चाहिए।

पूजनीयाः महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्षया विशेषतः।। विदुर नीति 6/11

स्त्रियाँ घर की लक्ष्मी हैं यह अत्यन्त सौभाग्य शालिनी पूजा के योग्य पवित्र और घर की दीप्ति हैं। अतः इनकी विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिए।

पूज्या लालयितव्याश्च स्त्रियो नित्यं जनाधिप।। महाभारत।।

हे राजन्! स्त्रियों का सदा सत्कार करना चाहिए। इन्हें लाड प्यार से रखना चाहिए।

इसके साथ ही नारी की प्रशस्ति में अनेक विद्वानों ने भी बहुत ही सुन्दर विचार प्रस्तुत किए हैं :–

नारी का निरादर करने वाला अपनी ही आंखों में छुरी घोप लेता है और नारी को पालने वाला नेत्र ज्योति पा लेता है। सुब्रह्मण्य भारती

स्त्री कांटेदार झाड़ी को फूल बनाती है। दरिद्र से भी दरिद्र मनुष्य के घर को सुशील स्त्री स्वर्ग बना देती है। – गोल्डस्मिथ

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पगतल में।

पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में। –जयशंकर प्रसाद

वेदों से लेकर ऋषि–मुनियों, समाज सुधारकों व विचारकों तथा देशी–विदेशी, दार्शनिक वैज्ञानिकों की दृष्टि में नारी जाति का स्थान बहुत ऊँचा और सम्मानजनक है। कन्या भ्रूण हत्यारों को नारी के इस महत्त्व को समझना होगा।

5. इतने पर भी यदि कन्या भ्रूण हत्या होती है तो राजा या सरकार को चाहिए कि कन्या भ्रूण हत्या के गुनहगारों को कठोर से कठोरतम दण्ड देने वाले कानून बनाये। सख्ती से उस कानून का पालन करवायें। कन्या भ्रूण हत्यारों को सार्वजनिक रूप से कठोरतम दण्ड निर्धारित किये जायें। यह अन्तिम उपाय है।

– प्राचार्य, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरि.)

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर
सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में
विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड–खण्डिनी पताका का आरोहण
20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अतः सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन–चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने–कोने से आर्यजन अपनी–अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा''** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश	**स्वामी दिव्यानन्द**	**स्वामी प्रणवानन्द**	**प्रो. विट्ठलराव आर्य**	**पं. माया प्रकाश त्यागी**
प्रधान–सार्व.सभा	प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल	कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल	मंत्री–सार्व.सभा	कोषाध्यक्ष–सार्व.सभा
गोविन्द सिंह भण्डारी	**सुखदेव वर्मा**	**दयाकृष्ण काण्डपाल**	**इं. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**डॉ. वीरेन्द्र पंवार**
प्रधान–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	कोषाध्यक्ष–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	मंत्री–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	प्रधान, आर्य समाज देहरादून	प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

आर्य समाज की गतिविधियाँ

डी. ए. वी. पटना में लगाया गया चरित्र निर्माण शिविर

डॉ. डी. राम डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, गोला रोड, दानापुर के प्रांगण में तीन दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

ब्रह्मा डॉ. प्रमोद योगार्थी जी के साथ श्री मनोज शास्त्री, श्री सत्योम् शास्त्री, श्री अरविन्द शास्त्री एवं श्रीमती अर्चना शास्त्री तथा श्री ओम प्रकाश आर्य के पौरोहित्य में यज्ञ–हवन सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह में बिहार के कैबिनेट सचिव श्री बृजेश मेहरोत्रा (आई.ए.एस.), श्री गुप्तेश्वर पाण्डेय (आई.पी.एस.) ए.डी. जी. पी. बिहार, भाई विरेन्द्र विधायक मनेर, प्रो. रणवीर नंदन विधान पार्षद ने शिविर की सफलता के लिए शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद दिया। श्री इन्द्रजीत राय ने आगन्तुक अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा समारोह के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। बच्चों के रंगारंग कार्यक्रमों ने सभी अतिथियों का मनमोह लिया।

इस शिविर में 14 डी.ए.वी. विद्यालयों से कक्षा पांचवीं से सातवीं तक के लगभग 600 विद्यार्थियों के साथ शिक्षक–शिक्षिकाओं ने सोत्साह भाग लेकर शिविर को सफल बनाया।

माननीय शिक्षामंत्री श्री अशोक चौधरी तथा भाजपा नेता श्री गंगा प्रसाद पूर्व विधान पार्षद एवं श्री राज किशोर यादव उपाध्यक्ष नगर परिषद् दानापुर ने शिविर का दौरा किया तथा डी.ए.वी. संस्थाओं की प्रशंसा करते हुए अधिक से अधिक शिविर लगाकर चरित्रवान विद्यार्थी बनाने पर बल दिया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग नई दिल्ली के सभा मंत्री श्री एस. के. शर्मा जी ने 51 कुण्डीय विश्वशांति महायज्ञ के पश्चात् सभी यज्ञकर्ता तथा शिविरार्थियों पर पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया।

श्री शर्मा जी ने पटना में महर्षि दयानन्द के तीन बार आगमन की चर्चा करते हुए यहां के लोगों को प्रेरित किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि उनका जीवन सभी शिक्षकों के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है। श्री शर्मा जी ने सभा प्रधान आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी की भावनाओं को व्यक्त करते हुए ईश्वरीय गुणों को धारण कर संस्था हित में समर्पित होकर कर्मचारियों तथा अधिकारियों को काम करने को कहा। शर्मा जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से सन् 1878 ई. में स्थापित आर्य समाज दानापुर कैंट का भी अवलोकन किया।

शिविर में मंत्रोच्चारण, समूह भजन, समूह राष्ट्रगीत, समूह लोकनृत्य, रंगोली, कार्ड निर्माण, एकल नाट्य, कक्ष सज्जा, डायरी लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

मानव कल्याण एवं विश्व शांति यज्ञ आयोजित

जयपुर : आर्य समाज समन्वय समिति मानसरोवर जयपुर के तत्वावधान में 17 से 24 जनवरी, 2016 तक विभिन्न स्थानों, शिक्षण संस्थान, पार्क मंदिर एवं आवासी परिसरों में श्रृंखलाबद्ध यज्ञ भजन एवं प्रवचनों के आयोजन हुए। इन आयोजनों के होतागण सर्वश्रीमती एवं श्री डी. के. गुप्ता, सुधा मित्तल, नन्दकिशोर काम्बोज, सुदेश राय, वेद प्रकाश आर्य, सुमित्रा शास्त्री, सुनील, के. एम. रामनानी, सरोज कालड़ा, जसवन्त सिंह हाडा तथा मधुरानी 'यश' रहे।

समन्वय समिति के संयोजक यशपाल 'यश' के अनुसार स्थानीय विद्वानों के ब्रह्मत्व में वेद मंत्रों को सुग्राह्य शैली में परिभाषित किया गया। राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भजनोपदेशक कु. भूपेन्द्र सिंह आर्य ने ऋषि दयानन्द के कृतित्व, समाज सुधार तथा राष्ट्रभक्ति के भजनों से आयोजन को सरस बनाया।

समिति संयोजक यशपाल 'यश' तथा संचालक सुनील अरोड़ा के अथक प्रयासों से स्थानीय जनता में आर्य समाज के कार्यक्रमों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई।

– ईश्वर दयाल माथुर

डॉ. अभिमन्यु कुमार और आचार्य विद्या प्रसाद का सार्वजनिक अभिनन्दन

30 जनवरी, स्वतन्त्रता सेनानी एवं महाशय मनफूल सिंह आर्य स्मारक समिति पलवल के 27वें प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया, इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण ढंग से यज्ञ सम्पन्न किया। समारोह में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, दिल्ली के निदेशक डॉ. अभिमन्यु कुमार और आर्य समाज के चिन्तक आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सांसद एवं मुम्बई पुलिस के पूर्व आयुक्त डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा कि वेद मार्ग पर चलकर ही घर समाज व देश में शांति स्थापित की जा सकती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय निर्माण पार्टी के प्रधान ठाकुर विक्रम सिंह ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि दिल्ली सरकार के पूर्व स्पीकर डॉ. योगानन्द शास्त्री और डी. ए. वी. स्कूल पलवल की श्रीमती अलका गुप्ता, आर्य समाज के पं. वेदपाल शास्त्री, योग परिवार से योगी अनुराग 'दीपू', हरिचन्द्र शास्त्री आदि लोगों ने अपने विचार रखे। इस समारोह में धन्यवाद समिति के अध्यक्ष डॉ. धर्म प्रकाश आर्य ने व्यक्त किया।

– धर्म प्रकाश आर्य, प्रधान, महाशय म. सिंह आर्य स्मारक समिति

लोक कल्याण एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु रचाया 51 कुण्डीय वैदिक यज्ञ

आर्य समाज भेल में मकर सौर संक्रांति के पावन पर्व पर 51 कुंडीय वैदिक यज्ञ रचाया गया। लोक कल्याण एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु आयोजित इस यज्ञ में 51 यज्ञकुण्डों पर 204 परिवारों ने यजमान बनकर धर्मलाभ उठाया।

यज्ञ के ब्रह्मा उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण गमन की संक्रमण बेला में यज्ञ का शास्त्रों में अत्यधिक महत्त्व बताया गया है। शास्त्रों में यज्ञ की गणना मानव के सर्वश्रेष्ठ कर्म के रूप में की गई है। यज्ञ करने से मानव का सर्वांगीण विकास होता है। आध्यात्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु आत्मिक, चारित्रिक, शारीरिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी यज्ञ का अत्यधिक महत्त्व होता है।

आर्यावर्त केसरी समाचार पत्र के प्रधान सम्पादक एवं आर्य उपप्रतिनिधि सभा अमरोहा के प्रधान डॉ. अशोक कुमार आर्य जी ने कहा कि महाभारत के युद्ध में वैदिक विद्वानों के मारे जाने के बाद आर्य परम्पराओं का लोप होता चला गया, परिणामस्वरूप आज समाज विभिन्न मत–पंथ–सम्प्रदायों, वर्ग, जातियों, भाषा, क्षेत्र आदि में बंटकर खण्डित हो गया। आर्य समाज ने समाज में अन्धविश्वास व पाखण्ड के उन्मूलन पर जोर देते हुए मनुष्य के श्रेष्ठ आचरण पर विशेष बल दिया। आर्य समाज के प्रयासों से ही बाल विवाह, वृद्ध विवाह, नारी प्रताड़ना, पर्दा प्रथा, अस्पृश्यता एवं सामाजिक बुराईयों का उन्मूलन हुआ। सामूहिक सस्वर वेद पाठ गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा अमरोहा की ब्रह्मचारियों ने किया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के मंत्री आर्य प्रवीण वैदिक ने किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

ज्ञानी भक्त और विषयसक्त

यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनाति भवति द्युमाँ अह।
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः।।

—ऋ० ५/३४/३

ऋषिः—संवरणः प्राजापत्यः।। देवता—इन्द्रः।। छन्दः—जगती।।

विनय—मैं इन दो प्रकार के आदमियों में से कौन—सा हूँ? क्या मुझे दिन—रात भगवान् के भजन में मस्त रहने में आदमियों में से कौन—सा हूँ? क्या मुझे दिन—रात भगवान् के भजन में मस्त रहने में आनन्द आता है? क्या मैं चौबीस घण्टे उसके भजन में लीन रहता हूँ। चौबीस घण्टे न सही, क्या मैं दिन—रात में से एक घण्टा भी भगवान् के प्रति अपना हार्दिक प्रेमरस पहुँचाने में बिताता हूँ? अथवा में 'ततनुष्टि हूँ? दिन—रात विषयों में फंसा रहता हूँ? न खत्म हानेवाले विषयों की तृप्ति में लगा रहता हूँ? स्वार्थ के लिए धन कमाने की चिन्ता में और धन के लिए दूसरों के क्लेशों की कुछ परवाह न करके और धोखा—फरेब भी करके उनके चूसने की नाना नयी—नयी तरकीबें सोचने और करने की फिक्र मे तो कहीं मेरे दिन—रात नहीं बीतते हैं? क्या अपने शरीर की शोभा बढ़ाने, संवारने, शृंगार करने में ही जीवन के अमूल्य समय के प्रतिदिन कई घण्टे मैं नहीं खो रहा हूँ? क्या मैंने अपने अन्दर के मानसिक शरीर को भी बलवान, स्वच्छ और सुन्दर (पवित्र) करने का भी कभी यत्न किया है? इसके लिए समय दिया है? मेरे साथी—संगी कैसे लोग हैं? कहीं मेरे इर्द—गिर्द बुरे आचरण वाले लोग तो इक्ट्ठे नहीं हो गये हैं? कहीं मैं कुत्सित कर्म करने वाले दुष्ट—मनुष्यों से (जो ऊपर से आकर्षक होते हैं) मिलने—जुलने में आनन्द तो नहीं पाता हूँ? अहो, उस सर्वशक्तिमान—इन्द्र के नियम अटल हैं, मैं जैसा करूंगा वैसा ही मुझे भरना पड़ेगा। मैं तेजस्वी बनूंगा या मेरा विनाश होगा? भगवान् तो दिन—रात—सोम—सवन करने वालों को तेजस्वी बना रहा है और विषय—ग्रस्त पुरुषों का नाश कर रहा है।

शब्दार्थ—यः=जो घ्रंस उत वा यः ऊधनि=दिन होवे या रात सदैव ही जो अस्मै=इस परमेश्वर के लिए सोमं सुनोति=ज्ञानपूर्वक भक्ति में रहता है, यजन करता है अह द्युमान् भवित=वह निश्चय से तेजस्वी (प्रकाशवान्) हो जाता है और इसके विपरीत ततनुष्टिम्=विषयों में दिनों—दिन फँसते जाने वाले को स्वार्थरत अजयनशील को तनुशुभ्रम्ः=शरीर की सजावट—बनावट में लगे रहने वाले को यः कवासखः=और जो बुरी संगत में रहने वाला है, जिसके कि यार—दोस्त कुत्सित—कर्मा लोग हैं, उस पुरुष को भी शक्रः मघवा=सर्वशक्तिमान् ऐश्वर्य वाला इन्द्रदेव अप अप ऊहति=मिटा देता है, विनाश कर देता है।

साभार—'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ —
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली—110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

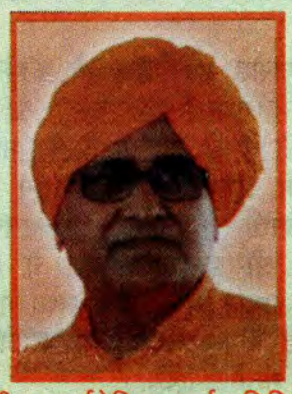

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी—तपस्वी संन्यासी,
युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर

स्वामी इन्द्रवेश

९वाँ बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

ब्रह्मा : स्वामी चन्द्रवेश जी आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम—टिटौली, जिला—रोहतक (हरि.)

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली—2

दिनांक : 2 मार्च, 2016 (बुधवार) से 13 मार्च, 2016 (रविवार) तक

संकल्प : इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री—पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम—टिटौली, जिला—रोहतक (हरि.)

मुख्य आकर्षण
चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
कार्यकर्ता अभिनन्दन समारोह

विशेष : महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव—निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम—टिटौली, जिला—रोहतक (हरि.)
सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772, 01262—286900

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.co
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है